सुनिता री सोच़

Bangani

सुनिता री सोच़

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india

Copyright © 2025, NLCI

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language
Community based Book

परकाशण:-
NLCI
बंगाणी मसी समिति समू

दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बढ़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकी जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

॥धन्यवाद॥

एक गाउँ दि 13 साल री लौड़की सुनिता आपड़ै आमा पापा रै साथै रौयै थी। पर सै बौरी गौरीब पौरिबार कौइ थै।

गौरीबी री बौज़ै कौइ सुनिताइ एक कालीन बुणनेरी फैक्ट्री दि काम कौरणौ पौड़ौ, सै हर रोज़ रातिकै कामे दि डै थी।

फैक्ट्री दि तीं पुरै दुसे दि कालीन रै
दुरे दि गांठ जा थी बानणै, एज़ि
बौज़ै कौइ तिंरी आखै औज़ि पिठ
बी दुखदि लागी।

तेत्कै ओर बी बौरी पेटारै थै। सै तेत्कै कम दियाड़ी दि बौरी मैनत कौरैण थै। तिउँ सारिउँ रौ मुँ बी बौरी उदास थौ।

फैक्ट्री रौ मालिक बी तिउँ पेटारौउँ बौरी डांटै थौ। औज़ि तिउँ आराम बी ना दै थौ कौरणै। सेउ तिउँरी मज़बुरी रौ बौरी फाइदौ उठा थौ।

सुनिता इस्कूलकै डेणै ज़्चाऐं थी, पर बौरी काम कौरणै रै बौज़ै कौइ सै बौरी थौकै थी, एज़ि बौज़ै कौइ सै ना पौड़ी सौकै थी। तिंरी किताबिउँ माइं बौरी दुड़ बोशी गोइ थी।

एक दूस बाल औदिकार संगठन दि
काम कौरणै वाळै तेस गाउँ दि
आयै। तिउँ तेत्कै रै पेटारौउँ री
हालत देखी सै बौरी डौरौन्दै औज़ि
उदास थै। एज़ि बौज़ै कौइ तिउँ
फैक्ट्री री जाँच़ की।

थोड़ेइ दूस बासियै पुळिस औज़ि
NGO री मदद कौइ सुनिता
औज़ि ओर पेटारै तीं फैन्ट्री कौइ
ओरु गाड़ै।

NGO ई सुनिता रै पौरिवार वाळौउँ आरी बात की, औज़ि तिउँरी मदद कौरणै खी वादौ कियौ, औज़ि बोलौ कि ऐबै सुनिता बी इस्कूलकै डेइ सौकै।

सुनिता रौ दाखिलौ तेथिकै गाउँ रौ इस्कुलेदि कियौ। सुनिता पैहली बैरै इस्कुलेरी ड्रैस बिड़ियौ बौरी खुश उई।

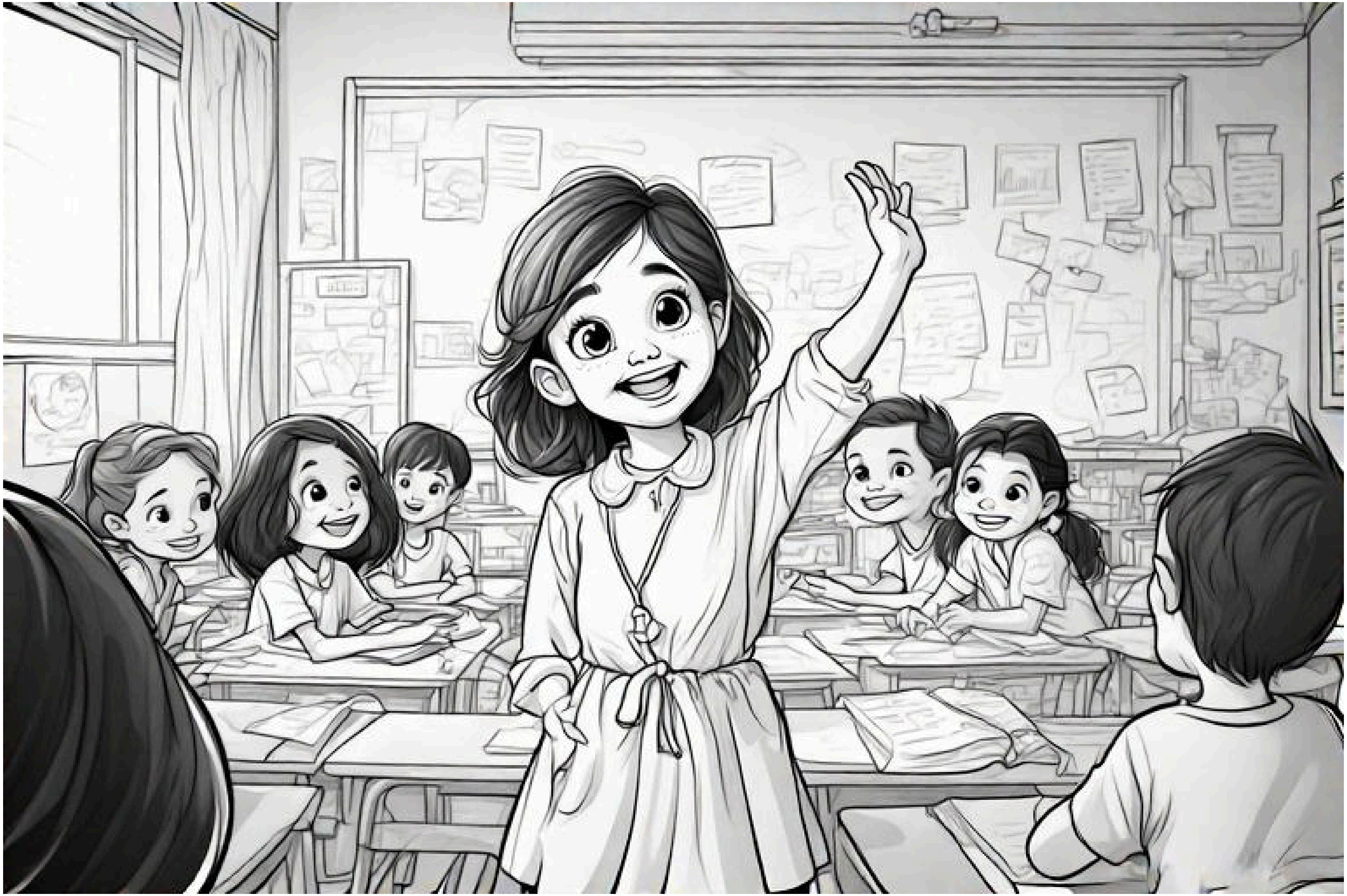

तेत्रा कौइ सुनिता रोज़ इस्कुलकै डेन्दि लागी। इस्कुलेदि तिरै नौयै नौयै दोस्त बौणै। सै आपड़ै दोस्तु कौइ बौरी खुश थी।

सुनिता च़ायै थी कि आउँ बौड़ी औइयौ। दुज़ौउँ री मदद कौरु ली। सै च़ायै थी कि जेशौ दुख मुइं ज़ेलौ तेशौ दुख कोइ ओर पेटारै ना ज़ेलै लै।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one "reading.")

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with "reading" when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers "read" a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher "read" it.

यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।
हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते है। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागो में शिक्षा देते है। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सके। और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सके।
हम जानते है कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते है। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगो के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते है। उसे उन्ही की मात्रभाषा में तैयार करते है। जिससे उन्हे पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।
हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में वयस्क शिक्षक ही नही चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगो के लिये तथा बच्चो के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्ही की मात्रभाषा में उपलब्द कराते है। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें ओर हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।
,,,,,,,,,,धन्यवाद,,,,,,,,,

Made with Bloom®